राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज)
(पीजीडीएईएम) राजेन्द्रनगर, हैदराबाद – 500 030, तेलंगाना

एईएम २०५ (205) - परियोजना कार्य के लिए दिशानिर्देश: विषय का चयन, रिपोर्ट लेखन और मूल्यांकन

पाठ्यक्रम एईएम २०५ (205) परियोजना कार्य (2 क्रेडिट): कृषि विस्तार प्रबंधन (पीजीडीएईएम) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पूरा करने के लिए (2 क्रेडिट का) अनिवार्य है। अभ्यर्थी को अपनी रुचि, कार्य क्षेत्र और भारतीय सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में कृषक समुदायों के लिए इसकी प्रासंगिकता के आधार पर, समेति (SAMETI) के परामर्श से A या B या C श्रेणी में से किसी एक विषय का चयन करना होगा।

MAIL प्रशिक्षु के परियोजना कार्य की निगरानी करेगा। सभी अभ्यर्थियों को दूसरे सेमेस्टर की परीक्षाओं से पहले एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट जमा करना आवश्यक है। परियोजना कार्य पर रिपोर्ट १०० (100) अंकों की है। उत्तीर्ण होने के लिए परियोजना कार्य में न्यूनतम ५० (50) अंक प्राप्त करना आवश्यक हैं।

परियोजना कार्य का उद्देश्य:

एईएम २०५ (205) परियोजन कार्य का उद्देश्य अभ्यर्थियों को पीजीडीएईएम कार्यक्रम से हासिल किए गए विस्तार प्रबंधन कौशल से संबंधित ज्ञान का परीक्षण करने का अवसर प्रदान करना है। पीजीडीएईएम का समग्र उद्देश्य विस्तार कार्यकर्ताओं को भागीदारी निर्णय लेने के लिए नवीनतम उपकरणों और प्रौद्योगिकियों से युक्त करना, कृषि विस्तार में विभिन्न विस्तार मॉडल और विकास में अंतर्दृष्टि प्रदान करना और उनकी तकनीकी-प्रबंधकीय दक्षताओं को बढ़ाना है।

पाठ्यक्रम की आवश्यकता के स्वरुप में अभ्यर्थियों को सुझाव दिया जाता है कि वे इनमें से किसी एक विषय को चुनें

(A) संबंधित विभागों से संबद्ध प्रौद्योगिकियां या

(B) विस्तार प्रबंधन दृष्टिकोण / कौशल या

(C) कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में सरकारी योजनाएं।

परियोजना कार्य के लिए ए / बी / सी श्रेणी से चुने गए विषय को एक क्षेत्र गतिविधि के रूप में नियोजित किया जाना है जिसे उम्मीदवार को अपने अधिकार क्षेत्र में लागू करना है और किसानों / हितधारकों के साथ क्षेत्र स्तर पर किए गए कार्यों और कृषक समुदाय के लिए इसकी उपयोगिता पर रिपोर्ट तैयार करना है।

परियोजना कार्य के लिए विषय का चयन कैसे करें:

मानदंड:

1. चयनित विषय का अभ्यर्थि के पदस्थापन के क्षेत्र और कृषि पारिस्थितिक स्थिति में का महत्व होना चाहिए।
2. ए या बी या सी श्रेणी से संबंधित विषय का चयन करना होगा। सभी श्रेणियों के लिए प्रदान की गई सूची केवल संकेतक है।
3. परियोजना कार्य केवल पुस्तक समीक्षा/रिपोर्ट पर आधारित नहीं होना चाहिए। यह एक क्षेत्रीय गतिविधि होनी चाहिए जिसमें प्राथमिक हितधारक के रूप में किसान/पशुपालक/मछुआरे/अन्य शामिल हों।
4. परियोजना कार्य सरल और निष्पादित करने में आसान होना चाहिए।
5. परियोजना कार्य समय और क्षेत्राधिकार (अभ्यर्थि के संचालन के क्षेत्र) के संदर्भ में अभ्यर्थि के नियंत्रण में होना चाहिए।
6. वित्तीय प्रतिबद्धताओं को शामिल नहीं करना चाहिए।
7. अभ्यर्थियों को परियोजना कार्य के लिए चुने गए विषय अपने राज्य के समेति को प्रथम सेमिस्टर की संपर्क कक्षाओं को पूरा करने के 15 दिनों के भीतर सूचित करना चाहिए। परियोजना कार्य के विषय में परिवर्तन/संशोधन की अनुमति संपूर्ण पाठ्यक्रम अवधि के दौरान केवल एक बार दी जाती है।
8. दूसरे सेमिस्टर की परीक्षा से पहले फील्ड गतिविधि पूरी करनी होगी ताकि समय पर रिपोर्ट जमा की जा सके।
9. परियोजना रिपोर्ट में क्षेत्र की गतिविधियों की तस्वीरें शामिल की जानी चाहिए।

परियोजना कार्य का अनुमोदन

10. क्षेत्र स्तर पर अभ्यर्थियों द्वारा किए गए परियोजना कार्य को उनके विभाग के तत्काल रिपोर्टिंग अधिकारी द्वारा पृष्ठांकित किया जाना चाहिए। निजी अभ्यर्थियों के मामले में जो किसी भी विभाग से संबंधित नहीं हैं, परियोजना कार्य को संबंधित समेति (SAMETI) में सक्षम प्राधिकारी द्वारा सीधे पृष्ठांकित किया जाना चाहिए।

11. प्रोजेक्ट रिपोर्ट कम से कम 20 पेज की होनी चाहिए और 50 पेज से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। अभ्यर्थियों को विभिन्न क्षेत्रीय अध्ययन रिपोर्ट, वार्षिक रिपोर्ट, कार्यक्रम मूल्यांकन रिपोर्ट, विशेषज्ञों की टिप्पणियों और परियोजना के विषय से संबंधित अन्य स्रोतों का उल्लेख करना चाहिए।

परियोजना रिपोर्ट की रुपरेखा

1. परिचय

रिपोर्ट का परिचय निम्नलिखित पहलुओं से संबंधित है:

A. विषय या विषय वस्तु: यह आम तौर पर इस संदर्भ में व्यक्त किया जाता है कि एक रिपोर्ट में विस्तृत कवरेज के लिए विषय पर्याप्त महत्व या औचित्यपूर्ण क्यों है।
B. परियोजना के उद्देश्य: आपकी फील्ड परियोजना (चयनित विषय पर) का विशिष्ट उद्देश्य क्या है और यह किसान/प्राथमिक हितधारकों के लिए कैसे सहायक होगा।
C. दायरा: आपके संचालन के क्षेत्र और अन्य क्षेत्रों में जहां यह लागू है, परियोजना को बढ़ाने या विस्तार करने या दोहराने की क्या संभावनाएं हैं। परियोजना से लक्षित समूह यानी किसानों या प्राथमिक हितधारकों को संभावित परिणाम और लाभ क्या हैं।

2. परियोजना कार्य करने की विधि

परियोजना कार्य शुरू करने के लिए अपनाई गई कार्यप्रणाली को पूरी तरह से समझाया जाना चाहिए। रिपोर्ट में परियोजना कार्य का स्थान, नमूना आकार (लक्षित समूह-किसान/हितधारक), शामिल प्रौद्योगिकियां/अनुसूची/प्रयोग, डेटा की व्याख्या के लिए विश्लेषण का विवरण (यदि कोई हो), परियोजना गतिविधियों की समय सीमा जैसे विवरण और परियोजना की प्रकृति के आधार पर अन्य विवरण शामिल होने चाहिए।

3. परिणाम और निष्कर्ष

तालिका, चार्ट, फोटो आदि के रूप में सहायक डेटा के साथ परियोजना कार्य के निष्कर्षों की एक विस्तृत प्रस्तुति देने की आवश्यकता है। परियोजना कार्य के परिणाम की प्रकृति इस प्रकार हो सकते हैं उदाहरण उपज में वृद्धि, कुशल जल प्रबंधन, समूहों का सशक्तिकरण, आय में वृद्धि, बीमारियों में कमी, नई तकनीक की शुरूआत और अपनाने, नवाचारों की प्रतिकृति; किसानों पर सरकारी योजना की पहुंच, स्वीकार्यता,

कवरेज और प्रभाव; सहभागी दृष्टिकोणों की प्रभावशीलता, फार्म स्कूल, किसान उत्पादक कंपनियां, सार्वजनिक निजी भागीदारी, आदि।

परिणामों और टिप्पणियों के आधार पर, प्राप्त निष्कर्ष सीखे गए पाठों, सुधार के सुझावों, भविष्य के लिए विशिष्ट सिफारिशों और अनुभव की गई सीमाओं के रूप में व्यक्त किए जा सकते हैं।

परियोजना कार्य के मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश:

- परियोजना रिपोर्ट A4 शीट पर टाइप की जानी चाहिए।
- परियोजना रिपोर्ट के लिए 100 अंक होते हैं।
- नियमित विभागीय अभ्यर्थियों के मामले में, तत्काल रिपोर्टिंग अधिकारी के समर्थन के साथ परियोजना रिपोर्ट का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। स्व-वित्त पोषित अभ्यर्थियों के मामले में जो किसी भी विभाग से संबंधित नहीं हैं, केवल समेति (SAMETI) में पीजीडीएईएम समन्वयक / सक्षम प्राधिकारी के समर्थन के साथ परियोजना रिपोर्ट का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- मूल्यांकन विषयों के A और B श्रेणी के तहत संसाधन व्यक्तियों के चिन्हित पैनल द्वारा ही किया जाना चाहिए।

परियोजना रिपोर्ट के लिए मूल्यांकन और अंक प्रदान करने के मानदंड:

मानदंड	अंक
परिचय (जिसमें विषय, उद्देश्य और कार्यक्षेत्र शामिल हैं)	15
कार्यविधि (जिसमें परियोजना कार्य के लिए क्षेत्र का चयन नमूना परिमाण (किसान / अन्य हितधारक), क्षेत्र का विवरण गतिविधि, साक्षात्कार कार्यक्रम, डेटा का विश्लेषण और व्याख्या आदि शामिल है)	30
परिणाम और निष्कर्ष	35
फोटो, डायग्राम, ग्राफ आदि	10
परियोजना रिपोर्ट लिखने का प्रारूप और अभिव्यक्ति में स्पष्टता (दिशानिर्देशों के अनुसार)	10
कुल:	100

परियोजना रिपोर्ट लिखने के लिए सामान्य सुझाव:

रिपोर्ट में निम्नलिखित शीर्षक होंगे:

1. कवर शीट
2. शीर्षक पृष्ठ
3. विषय सूची
4. सार
5. परिचय
   i विषय वस्तु या विषय
   ii. परियोजना के उद्देश्य
   iii. दायरा
6. परियोजना कार्य शुरू करने की पद्धति
7. परिणाम और निष्कर्ष
8. संदर्भ / ग्रंथ सूची
9. शब्दावली (यदि आवश्यक हो)
10. परिशिष्ट

1. शीर्षक पृष्ठ

- परियोजना का शीर्षक
- उम्मीदवार का नाम
- नामांकन संख्या
- विभाग का नाम
- प्रस्तुत करने का वर्ष

2. सामग्री तालिका

- स्पष्ट विन्यास के साथ सटीक होना चाहिए
- पेज नंबर के साथ सेक्शन नंबरिंग होनी चाहिए
- यदि लागू हो तो दृष्टांतों की सूची

3. सार

- एक रिपोर्ट के सार में निम्नलिखित शामिल हैं:
- रिपोर्ट का सार संक्षिप्त रुप में उपलब्ध कराना
- सूचनात्मक रूप, या वर्णनात्मक रूप
- अवैयक्तिक स्वर
- लेखन में जुड़ाव
- 150-250 शब्दों तक सीमित (लंबी रिपोर्ट के लिए, 1/2-1 पृष्ठ सिंगल-स्पेस)
- मुख्य जानकारी का पूरा सारांश

4. बॉडी फॉर्मेट

- समान स्तर के महत्व को दर्शाने वाले मुख्य शीर्षक
- अनुभाग शीर्षक से संबंधित सभी उपशीर्षक
- महत्व के पदानुक्रम को दर्शाने वाले स्तरों का चुनाव
- कैपिटल, अलग-अलग फॉन्ट, अंडरलाइनिंग, बोल्ड, इटैलिक जैसी सुविधाओं के सावधानीपूर्वक और लगातार उपयोग द्वारा दिखाए गए महत्व का पदानुक्रम
- इंडेंटिंग
- नंबरिंग/अक्षर प्रणाली
- पठनीयता और विन्यास को बढ़ाने के लिए अनुभागों के बीच का स्थान
- चार्ट, सांख्यिकी और दृष्टांतों का उपयोग करते समय उपयुक्तता, कैप्शन, टेक्स्ट में संदर्भ और स्थिति की जांच करें
- अप्रत्यक्ष रूप से संदर्भित सामग्री सहित सभी स्रोतों की पावती, प्रत्यक्ष उदाहरण, कॉपी किए गए आरेख, तालिकाएं, आंकड़े
- पाठ और संदर्भ सूची एवं ग्रंथ सूची में संदर्भों के बीच एक व्यवस्थित लिंक सुनिश्चित करें

5. सामग्री

- एक खंड से दूसरे खंड में और प्रत्येक खंड के भीतर विचारों का तार्किक विकास
- सबूत प्रस्तुत करें
- पीजीडीएईएम के दायरे में चुने गए विषय के लिए प्रासंगिक वस्तुनिष्ठ और विशिष्ट होना चाहिए

6. निष्कर्ष

- यह तथ्यों से उत्पन्न होना चाहिए और आश्वस्त करना चाहिए
- सिफारिशों के लिए पर्याप्त आधार होना चाहिए

7. सिफारिशें (यदि लागू हो)

- निष्कर्षों के आधार पर
- यह व्यावहारिक और विशिष्ट होना चाहिए
- सबसे महत्वपूर्ण जानकारी पहले रखें तथा अच्छी तरह से व्यवस्थित होना चाहिए।

8. संदर्भ

संदर्भ सूची को रिपोर्ट के अंत में रखा जाता हैं। लेखकों के उपनामों का वर्णानुक्रमिक क्रम और प्रत्येक लेखक के लिए कालानुक्रमिक रूप में व्यवस्थित रहें। संदर्भ सूची में केवल पाठ में उद्धृत संदर्भ शामिल रहें। लेखक का उपनाम पहले रखा जाता है, उसके तुरंत बाद प्रकाशन का वर्ष तारीख को अक्सर कोष्ठक में रखा जाता है। प्रकाशन का शीर्षक प्रकाशन की जगह के बाद की तारीख के बाद प्रकट होता है, फिर प्रकाशक। नीचे बताए अनुसार अल्पविराम, कोलन, पूर्ण विराम का उपयोग किया जा सकता है। ध्यान दें कि पुस्तकों के शीर्षक, पत्रिकाओं और अन्य प्रमुख कार्य इटैलिक में दिखाई दें (या हस्तलिखित होने पर रेखांकित होते हैं), जबकि लेखों के शीर्षक और छोटे कार्य जो बड़े कार्यों में पाए जाते हैं, उन्हें (आमतौर पर एकल) उद्धरण चिह्नों में रखा जाता है। संदर्भ का प्रारूप नीचे दिया गया है।

- बेएसली, वी. (1964), यूरेका एक सफल छात्र कैसे बनें, फ्लिंडर्स यूनवर्सिटी, बेडफोर्ड पार्क, साउथ अफ्रिका।
- बेट्स, के. एण्ड सेइट्ज, ए. (1986), सामाजिक विज्ञान में निबंध लेखन, मेलबर्न, थॉमस नेल्सन।
- क्लैंची, जे. एण्ड बैलार्ड, बी. (1981), छात्रों के लिए निबंध लेखन, मेलबर्न, लॉन्गमैन चेशायर।
- मार्शल, बी.आर. (1985), 'टर्शियरी एजुकेशन में कॉमन राइटिंग प्रॉब्लम्स' ऑस्ट्रेलियन एजुकेटर्स जर्नल, वॉल्यूम 7, नंबर 3, पीपी 56-64।
- व्हाइट, आर.वी. (1979a), फंक्शनल इंग्लिश, सनबरी-ऑन-थेम्स, नेल्सन।
- व्हाइट, आर.वी. (1979b), अकादमिक उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी, सनबरी-ऑन-थेम्स, नेल्सन।

9. शब्दावली (यदि शामिल है)

• वर्णानुक्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए

10. परिशिष्ट

- रिपोर्ट के अंत में रखा जाना चाहिए (यदि शामिल है)
- रिपोर्ट में निर्दिष्ट क्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए

पीजीडीएईएम के तहत परियोजना कार्य के लिए सुझाए गए विषय/ टॉपिक्स

A. प्रौद्योगिकियों की सूची

कृषि:

- मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन - मृदा परीक्षण और किसानों के लिए मृदा परीक्षण आधारित सिफारिशें
- मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिए सूक्ष्म पोषक तत्वों का उपयोग
- समस्याग्रस्त मिट्टी के लिए प्रबंधन प्रौद्योगिकियां
- मिट्टी और फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए अकार्बनिक उर्वरकों का वैकल्पिक स्रोत (हरी खाद एवं जैव उर्वरक)
- मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (आईएनएम) और इसकी उत्पादकता -एनपीएमएसएच एंड एफ - एनएमएईटी में शामिल पौध संरक्षण पर उप-मिशन
- जैव उर्वरकों का प्रयोग
- वर्मी – कम्पोस्ट, मिट्टी की उर्वरता में सुधार के लिए खाद
- खेत के कचरे का पुनर्चक्रण और विभिन्न खाद बनाने की तकनीक
- कचरा कम्पोस्टिंग की वर्तमान स्थितियों
- आपके अधिकार क्षेत्र की प्रमुख फसलों के पोषक तत्वों की कमी के लक्षण और उपचार पैमाने
- जैविक खेती तकनीक
- पादप स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए जैव प्राइमिंग बीज उपचार
- सतत फसल उत्पादन के लिए विविध नवाचार
- दलहन उत्पादन पौधौगिकियाँ
- फसल उत्पादकता बढ़ाने में वृद्धि पदार्थ
- एईएसए आधारित पादप स्वास्थ्य प्रबंधन
- कीट प्रबंधन के लिए पारिस्थितिक इंजीनियरिंग
- जैव कीटनाशकों का प्रयोग
- रोग प्रबंधन-पौध संरक्षण पर एनएमएईटी (NMAET) में शामिल उप-मिशन
- एकीकृत कीट प्रबंधन-एनएमएईटी (NMAET) में शामिल पौध संरक्षण पर उप-मिशन
- एकीकृत खरपतवार प्रबंधन-पौध संरक्षण पर एनएमएईटी में शामिल उप-मिशन

- यांत्रिक खरपतवार नियंत्रण
- जैविक खेती में कीट, रोग और खरपतवार प्रबंधन
- एकीकृत कृषि प्रणाली: लाभ, घटक और मॉडल
- शुष्क भूमि क्षेत्रों में जल प्रबंधन
- जल संरक्षण पौधौगिकियाँ और कृषि में महत्व
- वर्षा जल संचयन पौधौगिकियाँ
- स्वस्थानी नमी संरक्षण पौधौगिकियाँ सहित सूखा प्रबंधन
- मृदा और जल संरक्षण में वाटरशेड विकास का महत्व
- आपके क्षेत्र की प्रमुख तीव्रतर घटनाएं और प्रस्तावित आपदा प्रबंधन
- बाढ़ प्रबंधन और शमन तकनीक जैसी तकनीकें
- चावल गहनता प्रणाली (एसआरआई) खेती
- कृषि उपज की बर्बादी को कम करने के लिए महत्वपूर्ण फसलोत्तर पौधौगिकियाँ
- आपके क्षेत्रों के लिए उपयुक्त महत्वपूर्ण शुष्क भूमि पौधौगिकियाँ
- जलवायु परिवर्तन के लिए अनुकूलन और शमन पौधौगिकियाँ
- मूल्य संवर्धन
- सौर ऊर्जा के माध्यम से सिंचाई प्रबंधन
- कृषि और संबद्ध गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका
- कृषि और संबद्ध गतिविधियों में लिंग को मुख्य धारा में लाना
- खेत में काम करने वाले खेतिहर मजदूरों की श्रमसाध्य एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं
- कृषि यंत्रीकरण

कृषि इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी

मृदा और जल संरक्षण पौधौगिकियाँ

A. सूक्ष्म सिंचाई
B. ड्रेनेज तकनीक
C. वाटरशेड विकास और जल संचयन
D. पूर्व-निर्मित सिंचाई चैनल, डायवर्जन ब्लॉक, वी नॉच आदि जैसे खेत पर सिंचाई संरचनाएं।
E. ग्रीन हाउस और संरक्षित खेती

F. विभिन्न तरीकों से जल उपयोग दक्षता
G. फसलों की उत्पादकता पर कमान क्षेत्रों का प्रभाव

कृषि मशीनरी

A. जुताई के उपकरण
B. बुवाई के उपकरण
C. निराई और अंतरसांस्कृतिक उपकरण
D. पौध संरक्षण उपकरण
E. कटाई के उपकरण
F. विविध उपकरण

बागवानी

- ग्रीन हाउस की खेती
- बाग प्रबंधन
- आम में चंदवा प्रबंधन
- फर्टिगेशन के साथ सब्जियों की शेड नेट खेती
- मृदा परीक्षण आधारित एकीकृत पादप पोषक आपूर्ति प्रणाली (आईपीएनएसएस)
- ऑइल पाम से फसल विविधीकरण
- सब्जियों की खेती में रिले क्रॉपिंग
- पुराने और अनुत्पादक आम के बागों का पुनरुद्धार
- आम का उत्पादन और कटाई उपरांत प्रबंधन

पशुधन और डेयरी

- बकरी के दूध पर आधारित साबुन तकनीक का व्यवसायीकरण
- ठीक और स्मोक्ड मांस उत्पादों के उत्पादन के लिए पौधौगिकियाँ
- शेल्फ स्थिर मांस उत्पादों के उत्पादन के लिए पौधौगिकियाँ
- मूल्य वर्धित मांस उत्पाद पौधौगिकियाँ
- इमल्शन आधारित चिकन उत्पाद इमल्शन आधारित मटन उत्पाद
- मादा बच्चा उत्पादन प्रणाली

- बकरियों के लिए अनुकूलतम तल स्थान और वेंटिलेशन
- क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण
- पेड़ के पत्ते और खर्च किए गए अनाज आधारित फ़ीड ब्लॉक
- कृषि-औद्योगिक उप-उत्पादों के साथ सिलेज बनाना
- वनराजा: ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में विशेष रूप से फ्री रेंज पोल्ट्री फार्मिंग के लिए विकसित एक दोहरे उद्देश्य वाली किस्म।
- ग्रामप्रिया: ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में मुक्त श्रेणी की खेती के लिए विकसित एक परत प्रकार की किस्म।
- चारे का अनुपूरक
- समृद्ध धान पुआल ब्लॉक
- कृत्रिम गर्भाधान
- दूध दुहने की मशीन
- भूसा काटने की मशीन

मछली पालन

- झींगा पालन के व्यापक प्रणालियों की प्रौद्योगिकी।
- झींगा पालन के अर्ध-गहन प्रणालियों की प्रौद्योगिकी।
- गहन प्रणालियों की प्रौद्योगिकी।
- पेन कल्चर प्रौद्योगिकी।
- केज कल्चर पौधौगिकि।
- समेकित मत्स्य पालन।

मछली सह-कुक्कुट एकीकरण।

- फिश कम-डक सकीकरण ।
- चावल सह मछली कल्चर।
- बागवानी-मछली एकीकरण।
- सेरी-मछली एकीकरण।
- मीठे पानी में पर्ल कल्चर

- कार्प और झींगे की पॉली कल्चर प्रणाली में खिलाने के लिए उपयुक्त फीड फार्मूला, उत्पादन प्रक्रिया और खिलाने की विधियाँ।
- भारतीय प्रमुख कार्पों के विकास और उत्तरजीविता को बढ़ाने के लिए पूरक आहार।
- व्यापक कैटफ़िश हैचरी।

B. विस्तार दृष्टिकोण और तरीके

1. प्रसार और कृषि नवाचार को अपनाना।
2. ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण (केएसए) में परिवर्तन के संदर्भ में फार्म फील्ड स्कूलों के माध्यम से दर्शकों की प्रतिक्रिया पैटर्न।
3. किसानों की आय बढ़ाने में कृषि उत्पादक कंपनियों की भूमिका और प्रभाव पर एक अध्ययन।
4. अनुसंधान - विस्तार - किसान जुड़ाव - इसकी कमजोरियां और कड़ी को मजबूत करने की आवश्यकता।
5. कृषि नवाचारों में सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की भूमिका।
6. नवाचारों के प्रसार के लिए पारंपरिक, देसी और आधुनिक मीडिया का उपयोग करते हुए एक संचार रणनीति विकसित करें
7. महिलाओं को आजीविका के लिए कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में जाने के लिए मजबूर किया जाता है जिसे कृषि में नारीकरण कहा जाता है। लेकिन आशंका यह है कि कृषि नवाचारों तक उनकी पहुंच बहुत कम है। कृषि में महिलाओं के लिए संचार रणनीति का विश्लेषण और सुझाव दें
8. सिंचित या कमांड क्षेत्रों के अंतर्गत किसानों का पारस्परिक और समूह संचार व्यवहार।
9. आपके राज्य में चल रहे विस्तार प्रणाली (लियों) के प्रदर्शन, मूल्यांकन और निहितार्थ
10. विभिन्न हितधारकों - किसानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, कृषि प्रसंस्करणकर्ताओं, विपणक और अन्य खिलाड़ियों की क्षमता निर्माण।
11. खेत और घरेलू गतिविधियों में कृषि महिलाओं के समय के उपयोग और निर्णय लेने के स्वरुप पर एक अध्ययन।
12. विस्तार कार्यकर्ताओं की संगठनात्मक भूमिका, तनाव और कार्य निष्पादन।
13. ग्रामीण महिलाओं के उद्यमी व्यवहार का अध्ययन।

14. आपने जिन पीआरए तकनीकों का अध्ययन किया है उन्हें लागू करते हुए एक चयनित गांव की सूक्ष्म योजना विकसित करें।
15. आप अपने कार्यस्थल में कार्यान्वित किसी परियोजना की सहभागितापूर्ण योजना और निगरानी कैसे करते हैं।
16. जनोन्मुखी कार्यक्रम विकसित करने के लिए पीआरए तकनीकों का उपयोग करके किसी दिए गए गाँव की तकनीकी आवश्यकताओं की पहचान करें।
17. समूह के माध्यम से बाजार आधारित विस्तार किसानों को होगा – किसानों के सशक्तिकरण पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करें।
18. समय से संबंधित पीआरए विधियाँ - कृषि विकास की प्रक्रिया में इसका अनुप्रयोग और निहितार्थ।
19. क्षमता निर्माण का दिए गए ग्राहकों यानी किसानों और विस्तार कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाने में क्या भूमिका है?
20. प्रक्रिया के साथ अपने क्षेत्र और गतिविधि का काल्पनिक उदाहरण लेते हुए एक ज्ञान परीक्षण (ज्ञान को मापने के लिए उपकरण) विकसित करें।
21. कृषि और संबद्ध उद्यमों में सार्वजनिक-निजी भागीदारी।
22. कृषि साक्षरता स्तरों को मापने के लिए एक उपकरण विकसित कीजिये।
23. अपनी पसंद के गांव की शोध समस्या की पहचान करें - अध्ययन के लिए उद्देश्य और परिवर्ती विकसित कीजिये।
24. अफगानिस्तान में कृषि बाजार आसूचना प्रणाली - समस्याएं और संभावनाएं।
25. कृषि उपज की आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन - अवसर और संभावनाएं।
26. फ्यूचर ट्रेडिंग और कमोडिटी मार्केटिंग - भारत में कृषि विपणन में नयी परिदृश्य ।
27. व्यवसाय से उद्यमिता - कृषि उत्पादकों और उपभोक्ताओं की सहायता के लिए कृषि-व्यवसाय प्रबंधन में सबसे वांछित परिवर्तन।
28. ग्रामीण विपणन - कृषि व्यवसाय उद्यम में एक नया क्षितिज।
29. प्रोजेक्ट का प्रबंधन क्यों और कैसे करें? कृषि विस्तार में परियोजना प्रबंधन के लिए विस्तार पेशेवरों की मार्गदर्शिका ।
30. मानव पहलू - कृषि विस्तार में परियोजना प्रबंधन में सबसे महत्वपूर्ण कारक - एक अनूठा विश्लेषण।

31. कृषि परियोजना की वाणिज्यिक और वित्तीय व्यवहार्यता - इसकी सफलता का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक।
32. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) - कृषि विस्तार सेवाओं में एक नयी परिदृश्य।
33. अपनी प्रौद्योगिकी प्रसार प्रक्रिया में आईसीटी की शुरूआत के माध्यम से भारतीय कृषि का परिदृश्य बदलना।
34. ई-एक्सटेन्शन - कृषि विस्तार सेवाओं में प्रतिमान परिवर्तन आसानी और दक्षता के साथ लाखों किसानों तक पहुँच रहा है।

C. भारत सरकार और संबंधित राज्य की योजनाएं।